OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 8

कथा सरिता

घाटे की विदाई

एक गांव में देवीलाल नाम का बेईमान दुकानदार था। वह सामान में मिलावट करता था। जो एक बार सामान ले जाता, दोबारा उसके पास नहीं आता था। उसका धंधा मंदा होने लगा। एक दिन उसने पत्नी से कहा - 'बहुत कोशिश करने पर भी दुकान में बिक्री नहीं हो रही है।'

पत्नी ने सारी बात सुनने के बाद कहा - 'तुम सामान में मिलावट करते हो। इसलिए लोग हमारी दुकान पर नहीं आते। मिलावट बंद कर दो।' देवीदयाल को पत्नी की बात ठीक लगी। उसने मिलावट करना छोड़ दिया। ईमानदारी से धंधा करने लगा। ग्राहकों की इज़्ज़त करता और कहता - 'सामान खराब निकले, तो लौटा देना'। धीरे-धीरे देवीदयाल ने ग्राहकों का विश्वास जीत लिया। बिक्री बढ़ने लगी। थोड़े ही दिनों में उसकी आर्थिक हालत ठीक हो गई। उसके तीनों बच्चे पढ़ने लगे। किसी बात की कमी न रही। एक दिन देवीदयाल की दुकान पर एक फटेहाल आदमी आया। देवीदयाल ने उससे पूछा - 'क्यों भाई, क्या चाहिए?' परन्तु वह चुपचाप खड़ा होकर उसे घूरता रहा। बार-बार पूछने पर भी वह कुछ नहीं बोला। उसकी सूरत देखकर देवीदयाल डर गया। भीख देने लगा तो उसने भीख लेने से भी इंकार कर दिया। देवीदयाल सहमकर बोला - 'भाई न तुम भिक्षा ले रहे हो, न कोई सामान और न ही जा रहे हो, आखिर तुम कौन हो? वह हंसते हुए बोला - 'मैं घाटा हूँ। आज जाऊंगा, तो कल फिर आऊंगा। तुम्हारी दुकान में बहुत दिन से मुनाफा हो रहा है। लक्ष्मी चंचल हैं। एक के पास कभी नहीं रहतीं।' देवीदयाल ने उसके चरण पकड़ लिए। क्षमा मांगने लगा। घाटे ने कहा - 'मैं आऊंगा तो ज़रूर। हाँ, तुम कोई एक चीज़ मुझसे मांग सकते हो।' देवीदयाल चिंता में पड़ गया कि 'क्या मांगूं?' उसने एक दिन का समय मांगा। उदास देवीदयाल घर पहुंचा। पत्नी और बच्चों को सारी बातें बताई। पत्नी ने सलाह दी -'आपको दुकान मांग लेनी चाहिए।' देवीदयाल ने सोचा - 'जब घाटा होगा, तो दुकान में भी होगा।' उसने बड़े बेटे से पूछा। उसने कहा -'पिताजी, उससे रुपए मांग लीजिए।' यह बात भी देवीदयाल को नहीं जची। अब बड़ी बेटी ने कहा - 'दो वक्त का भोजन मांग लीजिए। भूखे तो नहीं रहना पड़ेगा।' आखिर में सेठ ने अपनी छोटी बेटी से सलाह मांगी। उसने कहा - 'आप उससे कहिए, तू भले ही रोज आ, मगर हम पहले की तरह प्रेम, शांति व ईमानदारी से अपना काम करते रहें।' यह बात देवीदयाल को ठीक लगी। दूसरे दिन जब वह अपनी दुकान पर गया, तो घाटा उसका इंतज़ार कर रहा था। उसने घाटे से छोटी बेटी की सलाह के अनुसार आशीर्वाद मांगा। यह सुनकर घाटा चुप हो गया और जाने लगा। देवीदयाल ने हैरान होकर पूछा - 'आप कहां जा रहे हैं?' घाटा मुस्कराकर बोला - 'जहां प्यार, शांति और ईमानदारी की बातें हों, वहां मेरा क्या काम।'

मार्टिन लूथर किंग की उदारता

अमेरिका के अश्वेत आंदोलन के प्रमुख नेता मार्टिन लूथर किंग का बचपन में माइकल किंग नाम रखा गया था। छह वर्ष की छोटी उम्र में ही इन्हें श्वेत-अश्वेत भेदभाव का कड़वा अनुभव हुआ। बालमन इसे देख विचलित हो उठा। वे हमेशा उसके बारे में सोचा करते। तब उनके पिता ने प्राटेस्टेंट पंथ के संस्थापक मार्टिन लूथर की जीवन कथा सुनाई और कहा, 'आज से तुम्हारा नाम मार्टिन लूथर किंग होगा।' तभी से मार्टिन ने श्वेत-अश्वेत भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन छेड़ने की कसम खाई। व्यस्क होते-होते वे अपने मिशन में जुट गए। इसी क्रम में एक बार किसी सार्वजनिक सभा में मार्टिन लूथर भाषण दे रहे थे। उनके दुश्मन भी कम नहीं थे। वहीं सभा में मौजूद किसी दुश्मन ने उन पर जूता दे मारा। जूता मार्टिन के पास जाकर गिरा और सभा में खलबली मच गई। सभा के आयोजक घबरा गए, किंतु मार्टिन शांत भाव से खड़े रहे। फिर उन्होंने जूते को बहुत स्नेह से उठाते हुए कहा, 'वह देश धन्य है, जहां के वासी अपने खिद्मतगारों का इतना खयाल रखते हैं। पैदल चलने वाले मुझ जैसे तुच्छ सेवक को यह जूता देकर किसी कृपालु ने बड़ी उदारता का परिचय दिया है, किंतु खेद है कि यह सिर्फ एक पांव का है। मेरा उन सज्जन से आग्रह है कि वे दूसरा जूता भी देने की कृपा करें। मैं उनका आभारी रहूँगा। जूते तो जोड़ी होने पर ही काम देते हैं।' मार्टिन लूथर किंग की विनम्रताभरी बातें सुनकर उनके दुश्मन हैरान रह गए और सभा उनके जयकारों से गूंज उठी। अपने विरोधियों की ओछी हरकतों पर शांत व प्रसन्नचित्त रहकर सर्वथा संतुलित प्रतिक्रिया देने वाले ही सच्चे जननायक बन पाते हैं, क्योंकि नेतृत्व करने वालों को इस प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

बेवकूफ बैल

मेले में दूर-दूर से झांकियां आई थीं। कुछ बड़े रथों पर, कुछ छोटे रथों पर। जिनके पास पैसा था, वे बड़े-बड़े रथों में देवताओं को सजाकर लाए थे। कुछ रथों में कई घोड़े जुते थे, तो कुछ में बैल। एक छोटा-सा रथ भी उस जुलूस में शामिल था। उसमें छोटी-सी एक झांकी थी। झांकी कपड़े व आभूषण से सजी थी। उस रथ में एक ऐसा बैल जुता था जिसने पहली बार इतना बड़ा मेला देखा था, इसलिए वह बहुत ऐंठ-ऐंठ कर चल रहा था। सड़क के दोनों ओर हज़ारों नर-नारी खड़े देवताओं को प्रणाम करके उनकी जय-जयकार भी बोल रहे थे और फूलों की वर्षा भी कर रहे थे। उस बैलगाड़ी पर सजी झांकी बड़ी मनोरम थी। इसलिए लोग उसके आगे भी हाथ जोड़ रहे थे। बैल मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था कि लोग उसके आगे भी हाथ जोड़ रहे हैं और झुक-झुककर प्रणाम कर रहे हैं। वह घमंड से फूला नहीं समा रहा था। उसे लग रहा था कि वह कितना महान है कि हज़ारों लोग उस पर फूल बरसा रहे हैं। घमंड में फूलकर बैल को लगने लगा कि गाड़ी को खींचने का काम तो बहुत बुरा है। उसकी प्रतिष्ठा के बराबर नहीं है। उसने आव देखा न ताव, अपनी पिछली दोनों लातें उछाल दीं। टांगों के उछलते ही रथ उलट गया और झांकी ज़मीन पर आ गिरी। गाड़ी के साथ चल रहे लोगों को बैल की इस हरकत पर बहुत गुस्सा अया। उन्होंने बैल की पीठ पर डंडे बरसाने शुरु कर दिए। इतन डंडे पड़े कि बैल अधमरा हो गया। तब बैल को होश आया कि लोग उसे नहीं, उस पर सजी झांकी को प्रणाम कर रहे थे।

स्टार्मवेल की बोलती बंद की

स्टार्मवेल नामक एक पत्रकार थे। उनके विषय में कहा जाता है कि वे जब भी किसी का साक्षात्कार लेते थे तो सामने वाले की नितांत निजी बातों को अक्खड़पन के साथ बोल देते थे। एक बार स्टार्मवेल को श्रीकृष्ण मेनन का साक्षात्कार लेना था। उन्होंने आक्रामक लहजे से शुरुआत की, 'मिस्टर मेनन! आपका स्वागत है। हम सभी जानते हैं कि आपने अपने जीवन की शुरुआत बहुत निचले स्तर से की। आप स्कूल में वॉच स्काउट थे। एक अंग्रेज महिला ने आपको अपने संरक्षण में ले लिया। उन्होंने ही आपको लंदन भेजा, जहां से आपने कानून व अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। फिर जब आप पढ़ लिखकर भारत आए तो वकालत के लिए संघर्ष किया। इसी दौरान नेहरू की निगाह आप पर गई और उन्होंने आपको सही मुकाम दिलाया। आप आज भी उनके प्रिय हैं। नेहरू के प्रधानमंत्री बनने के बाद आपको मंत्रिमंडल में लिए जाने की चर्चा चारो ओर हो रही है। आप खाक से उठकर आसमान की बुलंदियां छू रहे हैं। किंतु मिस्टर मेनन! आप मुझे बताइए कि क्या यह सच है कि आप कम्युनिस्ट हैं?' मेनन ने शांत और दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, 'प्रशंसा के लिए आभार, मिस्टर स्टार्मवेल! बदले में मैं आपकी भी प्रशंसा करुंगा। आप भी सड़कों पर अखबार बेचकर नीचे से ऊपर उठे हैं। मैंने सुना है कि आप मोटा वेतन पाते हैं, किंतु आप मुझे यह बताइए कि क्या आप वास्तव में अवैद्य संतान है?' मेनन के उत्तर ने स्टार्मवेल की बोलती बंद कर दी और उन्होंने विषय बदल दिया। साक्षात्कार लेने वाले को संतुलित दृष्टि व व्यवहार अपनाना चाहिए। साक्षात्कार देने वाले की प्राइवेसी का पूर्ण सम्मान करते हुए उसके अन्य महत्वपूर्ण पक्षों पर विवेकसम्मत ढंग से वार्तालाप करना चाहिए।

गांधीनगर-गुज.। आनंदी बेन पटेल का गुजरात की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनने पर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सरला,क्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. कैलाश तथा अन्य।

दिल्ली-लाजपत नगर। माननीय राधा मोहन सिंह,यूनियन मिनिस्टर ऑफ एग्रिकल्चर को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सपना।

छत्तरपुर। 'विश्व परिवर्तन का आधार नारी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मंजू सिंह,वाइस चेयरमैन,नगर पालिका परिषद घुवारा, ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. दीपा तथा ब्र.कु. रूपा।

डुंगरपुर-राज.। युवा प्रभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'दिव्य दर्पण' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कृति, विधायक सुशील कटारा, श्रीमती सुशील कटारा, शंकर सिंह सोलंकी, नगर परिषद सभापति सुशीला भील, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी तथा अन्य।

हाथरस। 'व्यसन मुक्त भारत' अभियान का झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए बटालियन कमांडेंट कर्नल धर्मवीर सिंह, ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

कोरवा। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का उद्घाटन करते हुए आर.एस.मुकाती,जी.एम.,सेंट्रल वर्कशॉप,एस.इ.सी.एल., ब्र.कु. रुक्मणि तथा अन्य।